'राजानुगत विवाहप्रवृत्त भृत्यवत्' अङ्गित्व को प्राप्त कर लेते हैं। जैसे → मुख्य राजा है पुनरपि भृत्य विवाह के समय में वह सजे-सँवरे दूल्हे के पीछे ही चलता है।

संलक्ष्यक्रम ध्वनि!

अनुस्वानाभसंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यस्थितिस्तु यः।
शब्दार्थोभयशक्त्युत्थस्त्रिधा स कथितो ध्वनिः॥

अनुस्वान अर्थात् अनुरणन घण्टा आदि बजाने के पश्चात् प्रधान शब्द के अनन्तर जो हल्का सा शब्द निकला करता है वही अनुरणन कहलाता है। अर्थात् जहाँ व्यञ्जक और व्यङ्ग्य का क्रम पौर्वापर्यभाव प्रतीत होता है वह संलक्ष्यक्रम ध्वनि काव्य होता है। यह प्रधानतः (1) शब्दशक्तिमूल (2) अर्थशक्तिमूल और (3) उभयशक्तिमूला होती है।

शब्दशक्त्युद्भव → अलङ्कारोऽथ वस्त्वेव शब्दाद्यत्रावभासते।
प्रधानत्वेन स ज्ञेयः शब्दशक्त्युद्भवो द्विधा॥

अलङ्कारो →
अमित समित! ———— अहित! —— ।
अत्र विरोधाभासः व्यङ्ग्यः।
अलङ्कारस्यापि ब्राह्मणश्रमण न्यायेनालङ्कारता।

वस्तुमात्र → 'अनलङ्कारं वस्तुमात्रम्' →
"पंथिण ण एत्थ ———— "
अत्र यद्युपभोगक्षमोऽसि तदा, आस्स्वेति व्यज्यते।

अर्थशक्तिमूला ध्वनि। → अर्थशक्त्युद्भवोऽप्यर्थो व्यञ्जकः सम्भवी स्वतः
प्रौढोक्तिमात्रात्सिद्धो वा कवेस्तेनोम्भितस्य वा॥
वस्तु वाऽलङ्कृतिर्वेति षड्भेदोऽसौ व्यनक्ति यत्।
वस्त्वलङ्कारमथवा तेनायं द्वादशात्मकः॥

स्वतः सम्भवी केवल भणिति मात्र निष्पन्नो बहिरप्यौचित्येन संभाव्यमानः कविना प्रतिभामात्रेण बहिरसन्नपि निर्मितः कविनिबद्धेन वक्त्रेति वा द्विविधोऽपर इति त्रिविधः।

स्वतःसम्भवी → व्यावहारिक जीवन में भी होता है।
कविप्रौढोक्तिसिद्ध: → कवि के द्वारा स्वप्रतिभा मात्र से कल्पना प्रसूत।

स्वतःसम्भवी वस्तुना वस्तु →
अलसशिरोमणि धूर्तानामग्रिमः पुत्रि धनसमृद्धिमयः।
इति भणितेन नताङ्गी प्रफुल्लविलोचना जाता।

स्वतः सम्भवी अलंकारेणालङ्कारः →
गाढकान्तदशनक्षतव्यथा ———— ।
यहाँ विशेषालङ्कार से तुल्ययोगिता अलङ्कार व्यङ्ग्य है।

कविप्रौढोक्तिसिद्धः वस्तुना वस्तु →
कैलासस्य प्रथमशिखरे ———— ॥
यहाँ पर वस्तु कविप्रौढोक्ति – कीर्ति का श्वानों में प्रवेश तथा कमल नाल शङ्का से दिग्गजों का सूंड झुकाना) से यह वस्तु ध्वनित होती है, कि (येषाम्-इति) जिन (जड हाथी आदि) को गीत आदि का) अर्थज्ञान नहीं है, उनमें भी कमलनाल आदि (खमादि) की बुद्धि उत्पन्न करके तुम्हारी कीर्ति चमत्कार उत्पन्न करती है।

कविनिबद्धवक्तृप्रौढोक्ति सिद्धः अलङ्कारेणालङ्कारः →
महिलासहस्रभरिते तव हृदये सुभग, सा अमान्ती।
अनुदिनमनन्यकर्मा अङ्गं तन्वपि तनयति ॥
यहाँ हेत्वलङ्कार तनूकरणेऽपि तव हृदये न वर्तते इति विशेषोक्ति

→ शब्दार्थोभयमूलक:
अतन्द्र चन्द्राभरणा समुद्दीपितमन्मथा।
तारकातरला श्यामा सानन्दं न करोति कम्॥
यहाँ उपमा व्यङ्ग्य है।
आर्थी व्यञ्जना शब्दपरिवृत्तिसह होती है तथा शाब्दी शब्दपरिवृत्त्यसह होती है। उपर्युक्त उदाहरण में चन्द्र, तारक, तरल और श्यामा शब्दों का परिवर्तन कर देने से ध्वनि नहीं रहती। किन्तु अतन्द्रा, आभरण, समुद्दीपित और मन्मथ शब्दों के पर्यायवाची रख देने पर भी ध्वनि की हानि नहीं होती।
शेषाश्चाष्टादशास्य तत।

वाक्ये द्व्युत्थः — द्व्युत्थ इति शब्दार्थोभयशक्तिमूलः।

पदैकदेशे — पदैकदेशरचनावर्णेष्वपि रसादयः।

भेदास्तदेकपञ्चाशत् →

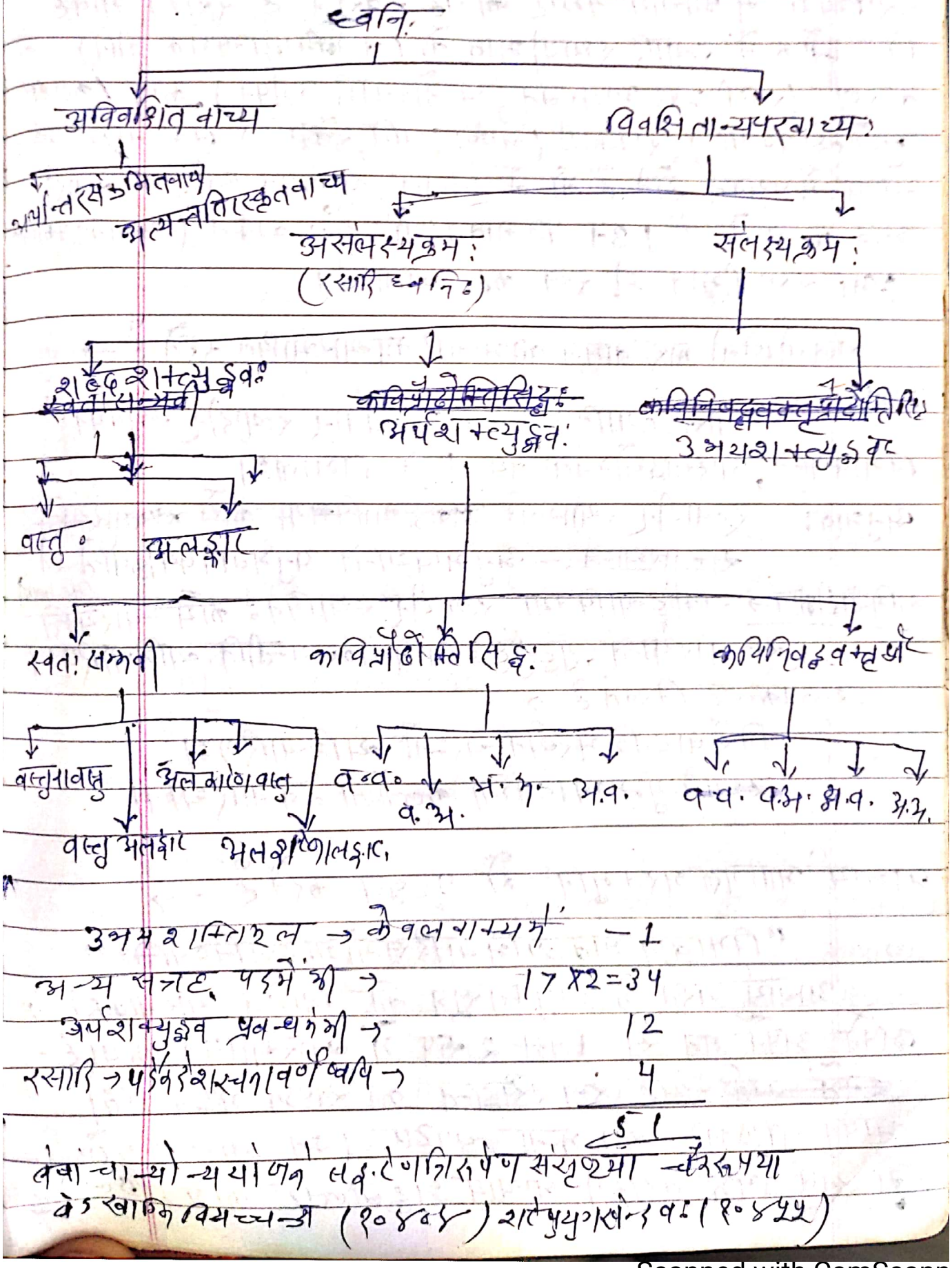

उभयशक्तिमूल → केवलवाक्यमें — 1

अन्य सत्रह पदमें भी → 17×2=34

अर्थशक्त्युद्भव प्रबन्धमें भी → 12

रसादि → पदैकदेशरचनावर्णेष्वपि → 4

51

तेषां चान्योन्ययोजने सङ्करेण त्रिरूपेण संसृष्ट्या चैकरूपया वेदखाब्धिवियच्चन्द्राः (१०४०४) शरेषुयुगखेन्दवः (१०४५५)